

रविवार 20 जुलाई, 2025

विषय — जिंदगी

स्वर्ण पाठः भजन संहिता 27 : 1

"यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूँ? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊँ?"

उत्तरदायी अध्ययनः भजन संहिता 27 : 3-5, 8, 11, 13

भजन संहिता 23 : 6

- ³ चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले, तौभी मैं न डरूँगा; चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए, उस दशा में भी मैं हियाव बान्धे निश्चित रहूँगा॥
- ⁴ एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूँगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊँ, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूँ॥
- ⁵ क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा।
- ⁸ तू ने कहा है, कि मेरे दर्शन के खोजी हो। इसलिये मेरा मन तुझ से कहता है, कि हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूँगा।
- ¹¹ हे यहोवा, अपने मार्ग में मेरी अगुवाई कर, और मेरे द्रोहियों के कारण मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल।
- ¹³ यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवितों की पृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखूँगा, तो मैं मूर्च्छित हो जाता।
- ⁶ निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूँगा॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. नीतिवचन 12 : 28

²⁸ धर्म की बाट में जीवन मिलता है, और उसके पथ में मृत्यु का पता भी नहीं॥

2. व्यवस्थाविवरण 33 : 1 (से इजराइल), 12 (प्रियतम), 25, 27 (से :), 29

¹ जो आशीर्वाद परमेश्वर के जन मूसा ने अपनी मृत्यु से पहिले इस्राएलियों को दिया वह यह है॥

- ¹² यहोवा का वह प्रिय जन, उसके पास निडर वास करेगा; और वह दिन भर उस पर छाया करेगा, और वह उसके कन्धों के बीच रहा करता है॥
- ²⁵ तेरे जूते लोहे और पीतल के होंगे, और जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी शक्ति हो॥
- ²⁷ अनादि परमेश्वर तेरा गृहधाम है, और नीचे सनातन भुजाएं हैं।
- ²⁹ हे इस्राएल, तू क्या ही धन्य है! हे यहोवा से उद्धार पाई हुई प्रजा, तेरे तुल्य कौन है? वह तो तेरी सहायता के लिये ढाल, और तेरे प्रताप के लिये तलवार है; तेरे शत्रु तुझे सराहेंगे, और तू उनके ऊंचे स्थानों को रौंदेगा॥

3. गिनती 13 : 1, 2, 25-28 (से :), 33

- ¹ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
- ² कनान देश जिसे मैं इस्राएलियों को देता हूं उसका भेद लेने के लिये पुरुषों को भेज; वे उनके पितरों के प्रति गोत्र का एक प्रधान पुरुष हों।
- ²⁵ चालीस दिन के बाद वे उस देश का भेद ले कर लौट आए।
- ²⁶ और पारान जंगल के कादेश नाम स्थान में मूसा और हारून और इस्राएलियों की सारी मण्डली के पास पहुंचे; और उन को और सारी मण्डली को संदेशा दिया, और उस देश के फल उन को दिखाए।
- ²⁷ उन्होंने मूसा से यह कहकर वर्णन किया, कि जिस देश में तू ने हम को भेजा था उस में हम गए; उस में सचमुच दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, और उसकी उपज में से यही है।
- ²⁸ परन्तु उस देश के निवासी बलवान् हैं, और उसके नगर गढ़ वाले हैं और बहुत बड़े हैं; और फिर हम ने वहां अनाकवंशियों को भी देखा।
- ³³ फिर हम ने वहां नपीलों को, अर्थात् नपीली जाति वाले अनाकवंशियों को देखा; और हम अपनी दृष्टि में तो उनके साम्हने टिड्डे के सामान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे॥

4. गिनती 14 : 6-9, 20 (से), 22, 23 (से), 24, 36-38

- ⁶ और नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालिब, जो देश के भेद लेने वालों में से थे, अपने अपने वस्त्र फाड़कर,
- ⁷ इस्राएलियों की सारी मण्डली से कहने लगे, कि जिस देश का भेद लेने को हम इधर उधर घूम कर आए हैं, वह अत्यन्त उत्तम देश है।
- ⁸ यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो हम को उस देश में, जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, पहुंचाकर उसे हमें दे देगा।
- ⁹ केवल इतना करो कि तुम यहोवा के विरुद्ध बलवा न करो; और न तो उस देश के लोगों से डरो, क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे; छाया उनके ऊपर से हट गई है, और यहोवा हमारे संग है; उन से न डरो।
- ²⁰ यहोवा ने कहा।
- ²² उन सब लोगों ने जिन्होंने मेरी महिमा मिस्र देश में और जंगल में देखी, और मेरे किए हुए आश्चर्यकर्मों को देखने पर भी दस बार मेरी परीक्षा की, और मेरी बातें नहीं मानी,
- ²³ इसलिये जिस देश के विषय मैं ने उनके पूर्वजों से शपथ खाई, उसको वे कभी देखने न पाएंगे।

- 24 परन्तु इस कारण से कि मेरे दास कालिब के साथ और ही आत्मा है, और उसने पूरी रीति से मेरा अनुकरण किया है, मैं उसको उस देश में जिस में वह हो आया है पहुंचाऊंगा, और उसका वंश उस देश का अधिकारी होगा।
- 36 तब जिन पुरुषों को मूसा ने उस देश के भेद लेने के लिये भेजा था, और उन्होंने लौटकर उस देश की नामधराई करके सारी मण्डली को कुड़कुड़ाने के लिये उभारा था,
- 37 उस देश की वे नामधराई करने वाले पुरुष यहोवा के मारने से उसके साम्हने मर गये।
- 38 परन्तु देश के भेद लेने वाले पुरुषों में से नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालिब दोनों जीवित रहे।

5. यहोशू 14 : 6-12 (से ;), 13, 14, 15 (और भूमि)

- 6 तब यहूदी यहोशू के पास गिलगाल में आए; और कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब ने उस से कहा, तू जानता होगा कि यहोवा ने कादेशबर्ने में परमेश्वर के जन मूसा से मेरे और तेरे विषय में क्या कहा था।
- 7 जब यहोवा के दास मूसा ने मुझे इस देश का भेद लेने के लिये कादेशबर्ने से भेजा था तब मैं चालीस वर्ष का था; और मैं सच्चे मन से उसके पास सन्देश ले आया।
- 8 और मेरे साथी जो मेरे संग गए थे उन्होंने तो प्रजा के लोगों को निराश कर दिया, परन्तु मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा की पूरी रीति से बात मानी।
- 9 तब उस दिन मूसा ने शपथ खाकर मुझ से कहा, तू ने पूरी रीति से मेरे परमेश्वर यहोवा की बातों का अनुकरण किया है, इस कारण निःसन्देह जिस भूमि पर तू अपने पांव धर आया है वह सदा के लिये तेरा और तेरे वंश का भाग होगी।
- 10 और अब देख, जब से यहोवा ने मूसा से यह वचन कहा था तब से पैतालीस वर्ष हो चुके हैं, जिन में इस्राएली जंगल में घूमते फिरते रहे; उन में यहोवा ने अपने कहने के अनुसार मुझे जीवित रखा है; और अब मैं पचासी वर्ष का हूं।
- 11 जितना बल मूसा के भेजने के दिन मुझ में था उतना बल अभी तक मुझ में है; युद्ध करने, वा भीतर बाहर आने जाने के लिये जितनी उस समय मुझ में सामर्थ्य थी उतनी ही अब भी मुझ में सामर्थ्य है।
- 12 इसलिये अब वह पहाड़ी मुझे दे जिसकी चर्चा यहोवा ने उस दिन की थी।
- 13 तब यहोशू ने उसको आशीर्वाद दिया; और हेब्रोन को यपुन्ने के पुत्र कालेब का भाग कर दिया।
- 14 इस कारण हेब्रोन कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब का भाग आज तक बना है, क्योंकि वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का पूरी रीति से अनुगामी था।
- 15 और उस देश को लड़ाई से शान्ति मिली॥

6. भजन संहिता 16 : 1, 5, 6, 8, 11

- 1 हेईश्वर मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैं तेरा ही शरणागत हूं।
- 5 यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे का हिस्सा है; मेरे बाट को तू स्थिर रखता है।
- 6 मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी, और मेरा भाग मनभावना है॥
- 8 मैं ने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है: इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न डगमगाऊंगा॥

- ¹¹ तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 200 : 9-13

जीवन है, था, और हमेशा सामग्री से स्वतंत्र रहेगा; क्योंकि जीवन ईश्वर है, और मनुष्य ईश्वर का विचार है, भौतिक रूप से नहीं बल्कि आध्यात्मिक रूप से, और वह क्षय और धूल के अधीन नहीं है।

2. 151 : 18 (वह)-24

रक्त, हृदय, फेफड़े, मस्तिष्क का जीवन, ईश्वर से कोई लेना-देना नहीं है। वास्तविक मनुष्य का प्रत्येक कार्य ईश्वरीय मन द्वारा संचालित होता है। मानव मन को मारने या ठीक करने की शक्ति नहीं है, और इसका परमेश्वर के मनुष्य पर कोई नियंत्रण नहीं है। जिस दिव्य मन ने मनुष्य को बनाया वह उसकी अपनी छवि और समानता को बनाए रखता है।

3. 246 : 1-16, 20-31

मनुष्य एक पेंडुलम नहीं है, जो बुराई और भलाई, खुशी और दुःख, बीमारी और स्वास्थ्य, जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा है। जीवन और उसके संकायों को कैलेंडरों द्वारा मापा नहीं जाता है। सही और अमर उनके निर्माता की शाश्वत समानता है। मनुष्य किसी भी तरह से अपूर्णता से उठने वाले पदार्थ के कीटाणु से नहीं है और आत्मा को उसके मूल से ऊपर पहुंचाने का प्रयास कर रहा है। धारा अपने स्रोत से ऊपर नहीं उठती है।

सौर वर्षों से जीवन का माप युवाओं को लूटता है और उम्र के लिए कुरूपता देता है। पुण्य का उज्ज्वल सूर्य और होने के साथ सत्य सह-अस्तित्व। घटता हुआ सूरज उसकी शाश्वत दोपहर है, जो एक गिरते सूरज से अनिच्छुक है। भौतिक और भौतिक के रूप में, सौंदर्य की क्षणिक भावना फीकी पड़ जाती है, आत्मा की चमक उज्ज्वल और अपूर्ण चमक के साथ उत्कीर्ण भावना पर भोर होनी चाहिए।

उस अच्छे और सुंदर सभी को मापने और सीमित करने की त्रुटि को छोड़कर, आदमी श्रीस्कोर वर्ष और दस से अधिक का आनंद ले सकता है और अभी भी अपनी ताकत, ताजगी और वादे को बनाए रखेगा। अमर मन द्वारा शासित मनुष्य हमेशा सुंदर और भव्य होता है। प्रत्येक सफल वर्ष ज्ञान, सौंदर्य और पवित्रता को प्रकट करता है।

जीवन शाश्वत है। हमें इसका पता लगाना चाहिए, और इसके बाद प्रदर्शन शुरू करना चाहिए। जीवन और अच्छाई अमर है। आइए फिर हम उम्र और तुषार के बजाय अपने अस्तित्व के विचारों को प्रेम, ताजगी और निरंतरता में आकार दें।

4. 247 : 13-18

अमरता, उम्र या क्षय से मुक्त, अपनी खुद की एक महिमा है, - आत्मा की चमक। अमर पुरुष और महिला आध्यात्मिक भावना के उदाहरण हैं, पूर्ण मन से खींचे गए और प्रेम के उन उच्च अवधारणाओं को दर्शाते हैं जो अपनी भौतिक भावना को पार करते हैं।

5. 248 : 5-11

परिपक्व वर्षों और बड़े पाठों के पुरुषों और महिलाओं को अंधेरे या निराशा में जाने के बजाय स्वास्थ्य और अमरता में परिपक्व होना चाहिए। अमर मन शरीर को अलौकिक ताजगी और निष्पक्षता के साथ खिलाता है, इसे विचारों की सुंदर छवियों के साथ आपूर्ति करता है और इंद्रियों के संकटों को नष्ट करता है जो प्रत्येक दिन निकट कब्र में लाता है।

6. 407 : 21-28

यदि भ्रम कहता है, "मैंने अपनी याददाश्त खो दी है," तो इसका खंडन करें। मन का कोई संकाय नहीं खोया है। विज्ञान में, सभी अनन्त, आध्यात्मिक, परिपूर्ण, हर क्रिया में सामंजस्यपूर्ण हैं। अपने आदर्श के विपरीत अपने आदर्शों को अपने विचारों में उपस्थित होने दें। विचार का यह आधुनिकीकरण प्रकाश में लाता है, और दिव्य मन, जीवन को मृत्यु नहीं, आपकी चेतना में लाता है।

7. 245 : 30 (जीर्णता)-31

... निपुणता कानून के अनुसार नहीं है, न ही यह प्रकृति की आवश्यकता है, लेकिन एक भ्रम है।

8. 5 : 16 (भगवान)-18

भगवान अपने प्यार की दौलत को समझ और प्यार में डालते हैं, जिससे हमें अपने दिन के मुताबिक ताकत मिलती है।

9. 183 : 16-25

अस्थायी कानून, जिसके परिणामस्वरूप परेशानी और बीमारी होती है, उनके कानून नहीं हैं, सत्य के वैध और एकमात्र संभव कार्य के लिए सद्भाव का उत्पादन है। प्रकृति के नियम आत्मा के नियम हैं; लेकिन नश्वर आमतौर पर कानून के रूप में पहचानते हैं जो आत्मा की शक्ति को छुपाता है। डिवाइन माइंड सही ढंग से मनुष्य की संपूर्ण आज्ञाकारिता, स्नेह और शक्ति की माँग करता है। किसी भी कम निष्ठा के लिए कोई आरक्षण नहीं किया जाता है। सत्य का पालन मनुष्य को शक्ति और सामर्थ्य देता है। त्रुटि के अधीन होने से शक्ति का नुकसान होता है।

10. 79 : 29-3

माइंड-साइंस सिखाता है कि मनुष्यों को "अच्छे कामों में थके हुए नहीं होना चाहिए।" यह अच्छा करने में थकावट दूर करता है। देने से हमें अपने निर्माता की सेवा में कमजोर नहीं पड़ता है, और न ही हमें समृद्ध बनाता है। हमारे पास सत्य के बारे में हमारी आशंका के अनुपात में ताकत है, और सच्चाई को प्रदर्शन देने से हमारी ताकत कम नहीं है।

11. 385 : 1-21

यह कहावत है कि फ्लोरेस नाइटिंगेल और मानवीय श्रम में लगे अन्य परोपकारी लोग बिना थके हुए थकान और जोखिम से गुजरने में सक्षम हैं, जिसे आम लोग सहन नहीं कर सकते। स्पष्टीकरण उस समर्थन में निहित है जो उन्होंने मानव से ऊपर उठकर दैवीय कानून से प्राप्त किया था। आध्यात्मिक मांग, सामग्री को दबाती है, ऊर्जा और सहनशक्ति की आपूर्ति करती है जो अन्य सभी सहायता से अधिक होती है, और उस दंड को रोकता है जो हमारे विश्वास हमारे सर्वोत्तम कर्मों से जुड़ा होगा। हमें याद रखना चाहिए कि अधिकार का शाश्वत नियम, हालांकि यह उस कानून को कभी भी रद्द नहीं कर सकता है जो पाप को अपना जल्लाद बनाता है, मनुष्य को सभी दंडों से छूट देता है, लेकिन गलत काम करने के कारण।

निरंतर परिश्रम, अभाव, जोखिम, और सभी अप्रिय स्थितियां, यदि पाप के बिना, बिना कष्ट के अनुभव की जा सकती हैं। जो भी करना आपका कर्तव्य है, आप खुद को नुकसान पहुंचाए बिना कर सकते हैं। यदि आप मांसपेशियों को मोचते हैं या मांस को घाव करते हैं, तो आपका उपाय हाथ में है। मन तय करता है कि मांस को उबाऊ या नहीं, दर्दनाक, सूजन और सूजन हो सकती है।

12. 414 : 32 (पदार्थ)-5

पदार्थ को प्रज्वलित नहीं किया जा सकता। सूजन भय है, मनुष्यों की उत्तेजित अवस्था है जो सामान्य नहीं है। अमर मन ही एकमात्र कारण है; इसलिए रोग न तो एक कारण है और न ही एक प्रभाव है। हर मामले में मन शाश्वत भगवान है, अच्छा है। सत्य में पाप, बीमारी और मृत्यु की कोई नींव नहीं है।

13. 199 : 8 (मांसपेशियों)-14

मांसपेशियां स्व-अभिनय नहीं कर रही हैं। यदि मन उन्हें नहीं हिलाता, तो वे गतिहीन होते हैं। इसलिए महान तथ्य यह है कि केवल मन ही अपने जनादेश के माध्यम से मनुष्य को शक्ति की मांग और आपूर्ति के कारण बढ़ाता और सशक्त बनाता है। मांसपेशियों के व्यायाम के कारण नहीं, बल्कि लोहार के व्यायाम में विश्वास के कारण उसका हाथ मजबूत हो जाता है।

14. 167 : 6-10

हम जीवन को दैवीय विज्ञान में तभी ग्रहण करते हैं जब हम भौतिक बोध से ऊपर रहते हैं और उसे ठीक करते हैं। अच्छाई या बुराई के दावों की हमारी आनुपातिक स्वीकृति हमारे अस्तित्व के सामंजस्य को निर्धारित करती है, - हमारा स्वास्थ्य, हमारी लंबी उम्र और हमारी ईसाई धर्म।

15. 492 : 7 (प्राणी)-12

पवित्र होना, समरसता, अमरता है। यह पहले से ही साबित हो गया है कि इस का ज्ञान, यहां तक कि छोटी सी डिग्री में, नश्वर लोगों के भौतिक और नैतिक स्तर को ऊपर उठाएगा, दीर्घायु को बढ़ाएगा, चरित्र को शुद्ध और ऊंचा करेगा। इस प्रकार प्रगति अंततः सभी त्रुटि को नष्ट कर देगी, और अमरता को प्रकाश में लाएगी।

16. 578 : 16-18

निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं [प्रेम] के [चेतना] धाम में वास करूंगा ॥

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6